

WORLD HISTORY

आधुनिक विश्व इतिहास

पुनर्जागरण से शीत युद्ध तक • 12 अध्याय



**NEW INDIA
EDUCATION (NIEd)**

— संकल्प आपका, साथ हमारा —

RAS MAINS EXAM

आधुनिक विश्व इतिहास

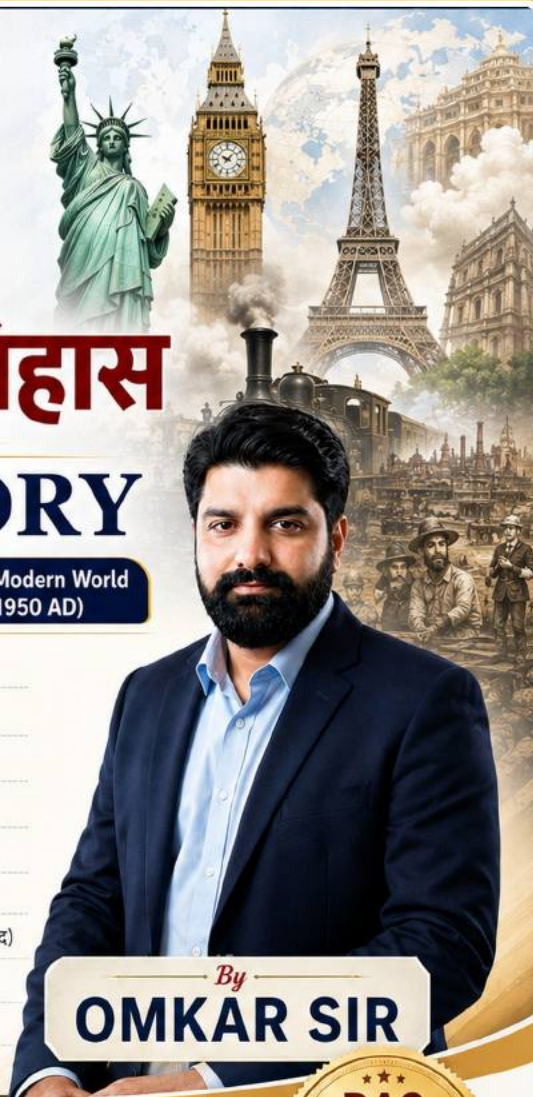
WORLD HISTORY

RAS Mains Paper-1

Part-C

**History of Modern World
(upto 1950 AD)**

- Renaissance and Reformation (पुनर्जागरण एवं धर्म-सुधार आंदोलन)
- Enlightenment and Industrial Revolution (प्रबोधन एवं औद्योगिक क्रांति)
- American War of Independence (अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, 1776)
- French Revolution (फ्रांसीसी क्रांति, 1789)
- Industrial Revolution (औद्योगिक क्रांति — विस्तृत अध्ययन)
- Russian Revolution (रूसी क्रांति, 1917)
- Imperialism and Colonialism in Asia and Africa (एशिया व अफ्रीका में साम्राज्यवाद)
- Nazism in Germany and Fascism in Italy (नाज़ीवाद एवं फासीवाद)
- Impact of World Wars (विश्व युद्धों का प्रभाव)
- World during Cold War — upto 1950 AD (शीत युद्ध काल — 1950 तक)



By
OMKAR SIR



सरल भाषा में
सम्पूर्ण कवरेज



परीक्षा की दृष्टि से
महत्वपूर्ण बिंदु



चार्ट, डायग्राम और
मैप्स सहित



समय की बचत,
बेहतर तैयारी की गारंटी



RAS Mains के लिए
विशेष रूप से उपयोगी



नोट्स + चित्र + तालिकाएँ + कालक्रम • भारत और राजस्थान से जुड़ाव सहित

www.omkarsir.com

आधुनिक विश्व इतिहास — परिचय

(History of Modern World) • पाँच सौ साल की एक कहानी • आरएएस मुख्य परीक्षा का पाठ्यक्रम •
अध्याय-सूची

📖 पाँच सौ साल की एक कहानी — अंधेरे से आज तक

कल्पना कीजिए आज से छह-सात सौ साल पहले का यूरोप। चारों ओर चर्च का बोलबाला है। पादरी जो कह दे वही सच है, और उस पर सवाल उठाना पाप ही नहीं, अपराध भी है। किताबें हाथ से लिखी जाती हैं और लैटिन में हैं, जिसे आम आदमी पढ़ नहीं सकता। किसान सामंत की ज़मीन से बँधा है और मानता है कि उसका दुख ईश्वर की मर्ज़ी है। बाद के लोगों ने इस दौर को "अंधकार युग" कहा। फिर 1453 में तुर्कों ने कुस्तुनिया जीत लिया। वहाँ के यूनानी विद्वान जान बचाकर इटली आए और अपने साथ प्राचीन यूनान और रोम की भूली हुई किताबें लेते आए। इटली के धनी व्यापारी शहरों में लोगों ने उन्हें पढ़ा तो चौंक गए कि हज़ार साल पहले का इंसान तर्क करता था, प्रकृति को परखता था और इंसान को ही हर चीज़ का केंद्र मानता था। उसी समय छापाखाना आ गया और किताबें सस्ती हो गईं। कलाकार असली इंसान के चित्र बनाने लगे और विद्वान हर बात पर पूछने लगे — "इसका प्रमाण क्या है?" सोच का यही नया जन्म **पुनर्जागरण** कहलाया। (अध्याय 1)

जब लोग हर बात पर सवाल पूछने लगे, तो सवाल चर्च तक भी पहुँचा। चर्च उस समय बहुत धनी और भ्रष्ट हो चुका था; वह पैसे लेकर पापों की माफ़ी की पर्चियाँ तक बेच रहा था। 1517 में जर्मनी के एक भिक्षु मार्टिन लूथर ने इसके विरोध में 95 आपत्तियाँ लिखकर सामने रख दीं। छापाखाने ने उसकी बात कुछ ही हफ़्तों में पूरे जर्मनी में फैला दी। लूथर ने कहा कि ईश्वर और इंसान के बीच किसी बिचौलिए की ज़रूरत नहीं, हर आदमी धर्मग्रंथ अपनी भाषा में खुद पढ़े। यूरोप का ईसाई समाज दो हिस्सों में बँट गया और पोप की एकछत्र सत्ता टूट गई। यह **धर्म-सुधार** था। (अध्याय 2)

चर्च पर सवाल उठ सकता था, तो राजा पर क्यों नहीं? अगली दो सदियों में वैज्ञानिकों ने दिखाया कि प्रकृति कुछ निश्चित नियमों से चलती है, किसी की मर्ज़ी से नहीं। तब विचारकों ने पूछा कि समाज और शासन भी तर्क के नियमों से क्यों न चलें। लॉक ने कहा कि जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति हर इंसान के जन्मजात अधिकार हैं। मॉन्टेस्क्यू ने कहा कि सत्ता एक हाथ में नहीं रहनी चाहिए। रूसो ने कहा कि शासन का अधिकार जनता से आता है, ईश्वर से नहीं। राजाओं ने इनकी किताबें जलवाई, पर विचार नहीं जले। यह दौर **प्रबोधन** कहलाया। (अध्याय 3)

ये विचार सबसे पहले समंदर पार जाकर हकीकत बने। अमेरिका में ब्रिटेन के तेरह उपनिवेश थे। ब्रिटेन उन पर कर लगाता था, पर अपनी संसद में उन्हें कोई जगह नहीं देता था। वहाँ के लोगों ने कहा — प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं। 1773 में उन्होंने ब्रिटिश चाय समंदर में फेंक दी और 4 जुलाई 1776 को स्वतंत्रता की घोषणा कर दी, जिसमें लिखा था कि सभी मनुष्य समान पैदा हुए हैं। आठ साल के युद्ध के बाद दुनिया का पहला आधुनिक गणतंत्र बना, जिसका राजा कोई नहीं, संविधान था। यह **अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम** था। (अध्याय 4)

अमेरिका की मदद करने वाला फ्रांस खुद उसी आग में जल उठा। उस युद्ध में फ्रांस का खज़ाना ख़ाली हो गया, और लौटे हुए सैनिक स्वतंत्रता के विचार साथ ले आए। देश में रोटी महँगी थी, किसान करों से दबे थे, जबकि कुलीन और पादरी कर देते ही नहीं थे। 14 जुलाई 1789 को पेरिस की जनता ने बास्तील का क़िला तोड़ दिया। क्रांति ने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का नारा दिया, राजा को मृत्युदंड दिया, और फिर नेपोलियन की सेनाएँ इन्हीं विचारों को पूरे यूरोप में ले गईं। यह **फ्रांसीसी क्रांति** थी। (अध्याय 5)

जब फ्रांस राजनीति बदल रहा था, इंग्लैंड चुपचाप काम करने का तरीक़ा बदल रहा था। वहाँ भाप का इंजन बना, कपड़ा बुनने की मशीनें बनीं और हाथ के काम की जगह कारख़ानों ने ले ली। जो कपड़ा एक जुलाहा महीनों में बनाता था, वह मशीन दिनों में बनाने लगी। गाँव ख़ाली हुए, शहर धुएँ से भर गए, और समाज में दो नए वर्ग बने — कारख़ाने का मालिक और मज़दूर। मज़दूर की बदहाली देखकर समाजवाद का विचार जन्मा। यह **औद्योगिक क्रांति** थी। (अध्याय 6)

अब कारख़ानों को दो चीज़ें चाहिए थीं — सस्ता कच्चा माल और माल बेचने के लिए बाज़ार। दोनों यूरोप के बाहर थे। इसलिए यूरोप के देश तोप और रेल लेकर एशिया और अफ़्रीका पर टूट पड़े। 1884-85 में उन्होंने बर्लिन में बैठकर पूरा अफ़्रीका नक्शे पर बाँट लिया। चीन को अफ़्रीम के युद्धों से झुकाया गया। भारत ब्रिटेन का सबसे बड़ा उपनिवेश बना और राजस्थान की रियासतें उसकी अधीनता में आ गईं। यह **साम्राज्यवाद** था। पर अब दुनिया में बाँटने को ज़मीन नहीं बची थी, और जो देश देर से पहुँचे थे, वे दूसरों का हिस्सा माँगने लगे। (अध्याय 7)

इसी होड़ ने 1914 में प्रथम विश्व युद्ध करा दिया, और उसी युद्ध के बीच रूस टूट गया। रूस में ज़ार का निरंकुश राज था, किसान भूखे थे, और मोर्चे पर लाखों सैनिक बिना ठीक हथियारों के मर रहे थे। 1917 में पहले ज़ार की गद्दी गई, फिर लेनिन के

नेतृत्व में बोलशेविकों ने सत्ता ले ली। दुनिया में पहली बार मज़दूरों और किसानों के नाम पर सरकार बनी, जिसने निजी संपत्ति खत्म करने की घोषणा की। यह **रूसी क्रांति** थी, और इसने दुनिया के पूँजीपतियों को डरा दिया तथा गुलाम देशों को उम्मीद दी। **(अध्याय 8)**

युद्ध खत्म हुआ, पर शांति नहीं आई। विजेताओं ने 1919 की वर्साय की संधि में जर्मनी पर पूरा दोष डालकर भारी जुर्माना लगा दिया। इटली जीतकर भी खुद को ठगा हुआ मान रहा था। ऊपर से 1929 की महामंदी ने करोड़ों लोगों को बेरोज़गार कर दिया। अपमान, भूख और साम्यवाद के डर से धिरे लोगों को ऐसे नेता अच्छे लगे जो कहते थे — लोकतंत्र कमज़ोर है, मुझे पूरी ताक़त दो, मैं देश का सम्मान लौटाऊँगा। इटली में मुसोलिनी और जर्मनी में हिटलर इसी तरह सत्ता में आए। यह **फ़ासीवाद और नाज़ीवाद** था। **(अध्याय 9)**

हिटलर ने 1939 में पोलैंड पर हमला किया और द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया। इस तरह केवल तीस साल में दुनिया ने दो विश्व युद्ध देखे। पहले में खाइयाँ, मशीनगनों और ज़हरीली गैस थी; दूसरे में शहरों पर बमबारी, यहूदियों का नरसंहार और अंत में हिरोशिमा-नागासाकी पर परमाणु बम। करोड़ों लोग मारे गए, जिनमें भारत और राजस्थान के सैनिक भी थे। इन युद्धों ने यूरोप की ताक़त तोड़ दी, संयुक्त राष्ट्र को जन्म दिया और भारत जैसे उपनिवेशों की आज़ादी का रास्ता खोल दिया। **(अध्याय 10)**

यूरोप थककर गिरा, तो दुनिया में दो ही बड़ी ताक़तें बचीं — पूँजीवादी अमेरिका और साम्यवादी सोवियत संघ। दोनों साथ लड़े थे, पर युद्ध खत्म होते ही एक-दूसरे से डरने लगे। दोनों के पास परमाणु बम थे, इसलिए वे सीधे नहीं लड़े; उन्होंने दुनिया को दो खेमों में बाँट लिया और कोरिया, वियतनाम जैसी जगहों पर दूसरों को लड़वाया। बर्लिन शहर के बीच एक दीवार खड़ी हो गई। नए-नए आज़ाद हुए भारत ने नेहरू के नेतृत्व में किसी खेमे में न जाने का रास्ता चुना, जिसे गुटनिरपेक्षता कहा गया। यह **शीत युद्ध** 1991 में सोवियत संघ के टूटने तक चला। **(अध्याय 11)**

यानी यह ग्यारह अलग विषय नहीं, एक ही कहानी है — जो एक सवाल "इसका प्रमाण क्या है?" से शुरू हुई और पाँच सौ साल में आज की दुनिया तक पहुँची। अब इसे एक-एक अध्याय में विस्तार से पढ़ते हैं।

1. आरएस मुख्य परीक्षा का पाठ्यक्रम

प्रश्नपत्र-1 (सामान्य अध्ययन-1), इकाई-1 इतिहास, भाग-ग — आधुनिक विश्व का इतिहास (History of Modern World) का पाठ्यक्रम और उससे जुड़े हमारे अध्याय इस प्रकार हैं:

क्र.	पाठ्यक्रम बिंदु	हमारे अध्याय
1	पुनर्जागरण और धर्म-सुधार (Renaissance and Reformation)	अध्याय 1, 2 (+ अध्याय 3 — प्रबोधन)
2	अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति, औद्योगिक क्रांति, रूसी क्रांति (American War of Independence, French Revolution, Industrial Revolution, Russian Revolution)	अध्याय 4, 5, 6, 8
3	जर्मनी में नाज़ीवाद और इटली में फ़ासीवाद (Nazism in Germany and Fascism in Italy)	अध्याय 9
4	विश्व युद्धों का प्रभाव, शीत युद्ध के दौरान विश्व (Impact of World Wars, World during Cold War)	अध्याय 10, 11 (+ अध्याय 7 — साम्राज्यवाद)

अतिरिक्त अध्याय क्यों: प्रबोधन (अध्याय 3) अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों की वैचारिक नींव है, और साम्राज्यवाद (अध्याय 7) प्रथम विश्व युद्ध का मुख्य कारण है — इसलिए इन दोनों को अलग अध्याय के रूप में रखा गया है।

पहलू	विवरण
प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्र-1 — कुल 200 अंक, समय 3 घंटे; वर्णनात्मक प्रश्न
इतिहास इकाई के अंक	कुल 70 अंक — 5 अंक वाले प्रश्न (40 अंक) + 10 अंक वाले प्रश्न (30 अंक); ये अंक राजस्थान, भारत और विश्व इतिहास — तीनों भागों में बाँटे हैं

पहलू	विवरण
प्रश्नों का स्वरूप	5 अंक — किसी घटना/अवधारणा की सटीक व्याख्या; 10 अंक — कारण, प्रभाव, तुलना या मूल्यांकन वाला विश्लेषण

2. हमारी अध्याय-सूची

अध्याय	शीर्षक	मुख्य विषय	पृष्ठ
00	परिचय और पाठ्यक्रम	पाँच सौ साल की एक कहानी, पाठ्यक्रम, अध्याय-सूची	1
01	पुनर्जागरण	अर्थ, कारण, इटली, मानवतावाद, कला-साहित्य-विज्ञान, प्रभाव	4
02	धर्म-सुधार आंदोलन	कारण, मार्टिन लूथर, काल्विन, इंग्लैंड, प्रति-धर्मसुधार, प्रभाव	46
03	प्रबोधन काल	वैज्ञानिक क्रांति, लॉक, वॉल्टेयर, मॉन्टेस्क्यू, रूसो, प्रभाव	76
04	अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम	कारण, घटनाक्रम, स्वतंत्रता की घोषणा, पेरिस संधि (1783), प्रभाव	109
05	फ्रांसीसी क्रांति	कारण, 1789-1799 का घटनाक्रम, नेपोलियन, विश्व और भारत पर प्रभाव	140
06	औद्योगिक क्रांति	इंग्लैंड में आरंभ, आविष्कार, प्रसार, सामाजिक-आर्थिक प्रभाव, भारत	174
07	साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद	नया साम्राज्यवाद, अफ्रीका का बँटवारा, चीन, एशिया, भारत-राजस्थान	205
08	रूसी क्रांति	ज़ारशाही, 1905, फ़रवरी-अक्टूबर 1917, लेनिन, स्टालिन, प्रभाव	235
09	फ्रासीवाद एवं नाज़ीवाद	मुसोलिनी, वाइमर गणराज्य, हिटलर, प्रलय, तुलना	263
10	विश्व युद्ध एवं उनका प्रभाव	दोनों युद्धों के कारण-घटनाक्रम, वर्साय, प्रभाव, भारत-राजस्थान	291
11	शीत युद्ध के दौरान विश्व	ट्रूमैन सिद्धांत, मार्शल योजना, नाटो, बर्लिन, कोरिया, गुटनिरपेक्षता, 1953-1991 की कहानी	317

अध्याय 01

पुनर्जागरण (Renaissance)

14वीं से 17वीं सदी — मध्ययुग के अंधकार से आधुनिक युग की सुबह तक

कहानी 1 — वह बूढ़ा, जिसने कहा कि पृथ्वी घूमती है

22 जून 1633, रोम। एक ठंडे, ऊँची छत वाले कमरे में 69 साल का एक बूढ़ा घुटनों के बल बैठा है। उसकी आँखें कमजोर हो चुकी हैं और हाथ काँप रहे हैं। सामने लाल चोगे पहने चर्च के बड़े धर्माधिकारी बैठे हैं। बूढ़े का नाम है **गैलीलियो गैलीली** — अपने समय का सबसे बड़ा वैज्ञानिक। और उसका अपराध? उसने अपनी दूरबीन से आसमान देखकर लिख दिया था कि **सूरज पृथ्वी के चारों ओर नहीं घूमता, पृथ्वी सूरज के चारों ओर घूमती है।**

चर्च के लिए यह बात धर्म के विरुद्ध थी। गैलीलियो के सामने दो ही रास्ते थे — अपनी बात वापस ले, या यातना और मृत्यु के लिए तैयार रहे। बूढ़े ने काँपती आवाज़ में अपनी बात वापस ले ली। उसे जीवन भर के लिए **घर में नज़रबंद** कर दिया गया। कहा जाता है कि उठते समय वह धीरे से बुदबुदाया — **"फिर भी, यह घूमती तो है।"**

अब ज़रा सोचिए। तीन सौ साल पहले के यूरोप में कोई ऐसा प्रश्न पूछने की हिम्मत ही नहीं करता था। 14वीं सदी तक चर्च जो कह दे, वही सच था। किताबें केवल लैटिन भाषा में थीं, जिसे आम आदमी पढ़ ही नहीं सकता था। किसान सामंतों की ज़मीन से बँधे थे और ज्ञान पादरियों की तिजोरी में बंद था। फिर ऐसा क्या बदला कि एक आदमी दूरबीन उठाकर चर्च से कह सका — "तुम ग़लत हो"?

बदलाव इटली के व्यापारिक नगरों — **फ्लोरेंस, वेनिस और मिलान** — से शुरू हुआ। वहाँ लोगों ने प्राचीन यूनान और रोम की भूली हुई किताबें फिर से पढ़ीं, कलाकारों ने इंसान को उसके असली रूप में बनाना शुरू किया, और विद्वानों ने हर बात पर पूछना शुरू किया — "इसका प्रमाण क्या है?" अंधविश्वास से तर्क की ओर, और ईश्वर-केंद्रित सोच से **मनुष्य-केंद्रित सोच** की ओर हुई इसी बौद्धिक और सांस्कृतिक क्रांति को **"पुनर्जागरण" (Renaissance)** कहते हैं। गैलीलियो हार गया, पर उसका प्रश्न जीत गया — और आगे के धर्म-सुधार, प्रबोधन, अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांति, सबकी जड़ इसी प्रश्न में है। इसीलिए RAS मुख्य परीक्षा के "आधुनिक विश्व का इतिहास" का पहला विषय यही है।

कहानी 2 — फ्लोरेंस के एक व्यापारी के बेटे की ज़िंदगी (1440–1510)

ध्यान रहे: इस कहानी का मुख्य पात्र काल्पनिक है, ताकि पूरा दौर एक आम इंसान की नज़र से समझ आ सके। कहानी में आई घटनाएँ, तिथियाँ और बाक़ी सभी व्यक्ति असली हैं।

पिता की दुकान। सन् 1440 में फ्लोरेंस के एक ऊन-व्यापारी के घर **लोरेंज़ो** का जन्म हुआ। उसके पिता न सामंत थे, न पादरी — वे व्यापारी थे। पूरब से आने वाला रेशम और मसाला इटली के बंदरगाहों से होकर ही यूरोप जाता था, इसलिए यहाँ के नगर धनी थे और उन पर राजा या सामंत का नहीं, **व्यापारियों का राज** था। लोरेंज़ो के पिता कहते थे — "बेटा, हिसाब लिखना सीखो। खेत वाले का बेटा खेत से बँधा है, पर पढ़ा-लिखा आदमी कहीं भी जा सकता है।" यही नया **मध्यम वर्ग** था, जिसके पास पैसा भी था और सोचने की फुरसत भी।

नगर के सेठ। फ्लोरेंस का सबसे बड़ा साहूकार घराना **मेदिची** था। वे अपना पैसा महल, मूर्तियों, चित्रों और पुस्तकालयों पर खर्च करते थे। लोरेंज़ो रोज़ देखता कि कलाकार अब केवल चर्च के लिए नहीं, इन सेठों के लिए भी काम कर रहे हैं — और सेठ चाहते थे कि चित्रों में संत ही नहीं, **असली इंसान, असली चेहरे और असली दुनिया** दिखे।

पूरब से आए गुरु। जब लोरेंज़ो तेरह साल का था, तब ख़बर आई कि **1453** में तुर्कों ने **कुस्तुंतुनिया** जीत लिया है। वहाँ के यूनानी विद्वान अपनी पुरानी पांडुलिपियाँ बग़ल में दबाए इटली भाग आए। उन्हीं में से एक लोरेंज़ो का शिक्षक बना। उसने लड़के को प्लेटो और अरस्तू पढ़ाए और कहा — "हज़ार साल पहले इंसान ने इतना कुछ सोच लिया था; चर्च ने हमें यह कभी बताया ही नहीं।" पुराने यूनान-रोम के इसी ज्ञान के **दोबारा जन्म** से इस युग को अपना नाम मिला।

छपी हुई किताब। बचपन में लोरेंज़ो के घर एक ही किताब थी — हाथ से लिखी, इतनी महँगी कि उसे ताले में रखा जाता था। फिर जर्मनी के **गुटेनबर्ग** ने लगभग 1455 में **छापाख़ाना** चला दिया, और कुछ ही वर्षों में इटली में भी छापाख़ाने खुल गए। अब किताब सस्ती थी, और वह भी लैटिन में नहीं, उस **बोलचाल की भाषा** में जिसमें **दांते** ने सौ साल पहले लिखा था। लोरेंज़ो की बहन, जो लैटिन नहीं जानती थी, पहली बार ख़ुद पढ़ सकी।

नई सोच। शिक्षक की एक बात लोरेंज़ो को जीवन भर याद रही — "यह जीवन केवल अगले जन्म की तैयारी नहीं है। इंसान में बुद्धि है, सुंदरता है, क्षमता है; इसी धरती पर उसका जीवन मूल्यवान है।" इसी सोच को **मानवतावाद** कहते हैं, और यही पुनर्जागरण की आत्मा है।

कला और खोज। जवानी में लोरेंज़ो ने एक कार्यशाला में **लियोनार्दो दा विंची** नाम के लड़के को देखा, जो चित्र बनाने से पहले पक्षियों के पंख और इंसान की माँसपेशियाँ नापता था। बुढ़ापे में उसने नगर के चौक पर **माइकल एंजेलो** की बनाई "डेविड" की मूर्ति (1504) देखी — संगमरमर में ऐसा जीवित शरीर उसने कभी नहीं देखा था। और 1492 में खबर आई कि **कोलंबस** नाम का नाविक समुद्र पार एक नई दुनिया तक पहुँच गया है। जिस दुनिया में लोरेंज़ो पैदा हुआ था, वह उसके मरने तक पहचान में नहीं आती थी।

इस कहानी में पूरा अध्याय छिपा है: व्यापार और धनी नगर (खंड 3), कुस्तुनियु का पतन और छापाखाना (खंड 4), बोलचाल की भाषाओं का साहित्य (खंड 6), कला (खंड 7), विज्ञान (खंड 8) और मानवतावाद (खंड 9)। आगे इन्हीं को एक-एक करके विस्तार से पढ़ेंगे।

📋 अध्याय-सामग्री (विषय-सूची)

1. अर्थ, शब्द-उत्पत्ति, परिभाषाएँ एवं काल	8. विज्ञान पर प्रभाव एवं भौगोलिक खोजें
2. पृष्ठभूमि — मध्ययुग (अंधकार युग)	9. मानवतावाद — पुनर्जागरण की आत्मा
3. इटली में सबसे पहले क्यों? — 7 कारण	10. परिणाम एवं प्रभाव (मैकियावेली सहित)
4. पुनर्जागरण के कारण	11. भारत एवं राजस्थान से संबंध
5. पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ	12. प्रमुख व्यक्तित्व — एक नज़र में
6. साहित्य पर प्रभाव (शेक्सपियर सहित)	13. तुलनात्मक अध्ययन
7. कला पर प्रभाव — चित्र, मूर्ति, स्थापत्य	14. पुनर्जागरण — कालक्रम (Timeline)

शुरू करने से पहले — इस अध्याय के ज़रूरी शब्द

इस अध्याय में कुछ शब्द बार-बार आएँगे। इन्हें पहले ही समझ लेने से आगे का पूरा अध्याय बिना रुके समझ आएगा।

A. चर्च और उसका ढाँचा

New India Education by Omkar Sir

चर्च शब्द के दो अर्थ हैं। पहला अर्थ है **गिरजाघर**, यानी ईसाइयों का पूजा-स्थल। दूसरा अर्थ है **ईसाई धर्म की पूरी संस्था**, जिसके पास मध्ययुग में ज़मीन, धन, अदालतें और अपार राजनीतिक शक्ति थी। इस अध्याय में "चर्च" का मतलब अधिकतर यही संस्था है।

शब्द	अर्थ (आसान भाषा में)
पोप (Pope)	रोम का सबसे बड़ा धर्मगुरु, जो पूरे रोमन कैथोलिक चर्च का प्रमुख होता है। मध्ययुग में पोप का आदेश राजाओं पर भी लागू माना जाता था; वह किसी राजा को धर्म से बाहर तक कर सकता था।
वेटिकन (Vatican)	रोम नगर के भीतर वह स्थान जहाँ पोप रहता है और जहाँ संत पीटर गिरजाघर है। आज यह दुनिया का सबसे छोटा स्वतंत्र देश है।
कार्डिनल (Cardinal)	पोप के बाद सबसे ऊँचे दर्जे के धर्माधिकारी। नए पोप का चुनाव कार्डिनल ही करते हैं।
बिशप और पादरी	बिशप एक पूरे क्षेत्र के गिरजाघरों का प्रमुख होता है; पादरी (Priest) एक गिरजाघर में पूजा-प्रार्थना कराता है।
मठ (Monastery)	वह स्थान जहाँ ईसाई साधु (भिक्षु) और साध्वियाँ संसार छोड़कर रहते थे। मध्ययुग में पुस्तकें हाथ से नक़ल करने का काम इन्हीं मठों में होता था।

शब्द	अर्थ (आसान भाषा में)
बाइबिल	ईसाइयों का धर्मग्रंथ। इसके दो भाग हैं — पुराना नियम (Old Testament), जिसमें ईसा से पहले की कथाएँ हैं, और नया नियम (New Testament), जिसमें ईसा मसीह का जीवन और उपदेश हैं।
धर्म-अदालत (Inquisition)	चर्च की अपनी अदालत, जो 13वीं सदी में बनाई गई। इसका काम उन लोगों को खोजना और सज़ा देना था जो चर्च की मान्यताओं से अलग बात कहते थे। ऐसे व्यक्ति को "पाखंडी" या "धर्मद्रोही" (Heretic) कहा जाता था। सज़ा में जेल, संपत्ति ज़ब्त करना और ज़िंदा जला देना तक शामिल था।

■ आसान परिभाषा: कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट

 **परिभाषा:** कैथोलिक वे ईसाई हैं जो पोप को अपना सर्वोच्च धर्मगुरु मानते हैं। प्रोटेस्टेंट वे ईसाई हैं जिन्होंने 16वीं सदी में पोप की सत्ता का विरोध (प्रोटेस्ट) करके अपने अलग चर्च बना लिए।

 **आसान भाषा में:** पुनर्जागरण के समय तक पश्चिमी यूरोप में केवल एक ही चर्च था — कैथोलिक। 1517 में मार्टिन लूथर के विरोध के बाद ईसाई दो बड़े हिस्सों में बँट गए।  **उदाहरण:** जैसे किसी बड़ी संस्था के कुछ सदस्य मुखिया की मनमानी से नाराज़ होकर अलग संस्था बना लें — पुरानी संस्था "कैथोलिक" और नई "प्रोटेस्टेंट"।

B. साम्राज्य और राज्य

- ◆ **रोमन साम्राज्य:** प्राचीन काल का विशाल साम्राज्य, जिसकी राजधानी रोम (इटली) थी। चौथी सदी में यह दो भागों में बँट गया। **पश्चिमी भाग 476 ई. में** जर्मन कबीलों के हमलों से समाप्त हो गया — यहीं से यूरोप का मध्ययुग शुरू माना जाता है।
- ◆ **बाइज़ेंटाइन (पूर्वी रोमन) साम्राज्य:** रोमन साम्राज्य का पूर्वी भाग, जो पश्चिमी भाग के गिरने के बाद भी लगभग एक हजार वर्ष (1453 ई. तक) चलता रहा। इसकी राजधानी **कुस्तुंतुनिया** (आज का इस्तांबुल, तुर्की) थी और यहाँ की भाषा यूनानी थी। इसी कारण प्राचीन यूनानी ग्रंथ यहाँ सुरक्षित रहे।
- ◆ **पवित्र रोमन साम्राज्य (Holy Roman Empire):** नाम से भ्रम होता है, पर यह प्राचीन रोमन साम्राज्य नहीं था। यह मध्य यूरोप (मुख्यतः आज का जर्मनी, ऑस्ट्रिया और उत्तरी इटली) के सैकड़ों छोटे राज्यों का एक ढीला संघ था, जिसके सम्राट को पोप मुकुट पहनाता था। यह 1806 ई. तक चला।
- ◆ **नगर-राज्य (City-state):** ऐसा स्वतंत्र राज्य जिसमें केवल एक नगर और उसके आसपास का इलाक़ा हो, और जिसकी अपनी सरकार, सेना और मुद्रा हो। इटली उस समय एक देश नहीं था — फ्लोरेंस, वेनिस, मिलान जैसे कई नगर-राज्यों में बँटा था।
उदाहरण: जैसे आज सिंगापुर एक नगर होकर भी पूरा देश है।

C. समाज और अर्थव्यवस्था

- ◆ **बुर्जुआ (मध्यम वर्ग):** व्यापारी, बैंकर, कारीगर और वकील जैसे नगरों में रहने वाले लोग, जो न सामंत थे और न किसान। इनकी ताक़त ज़मीन से नहीं, **धन और व्यापार** से आती थी।
- ◆ **पूँजीवाद (Capitalism):** वह आर्थिक व्यवस्था जिसमें कारख़ाने, व्यापार और धन निजी लोगों के हाथ में होते हैं और काम **मुनाफ़ा कमाने** के लिए किया जाता है। कमाया हुआ धन फिर व्यापार में लगाया जाता है ताकि और मुनाफ़ा हो।
- ◆ **संप्रभुता (Sovereignty):** किसी राज्य की वह सर्वोच्च शक्ति जिसके ऊपर कोई और शक्ति न हो — यानी अपने क्षेत्र में अंतिम निर्णय लेने का अधिकार।

1. अर्थ, शब्द-उत्पत्ति, परिभाषाएँ एवं काल

A. शाब्दिक अर्थ और शब्द की उत्पत्ति

- ◆ **"रेनेसाँ" (Renaissance)** मूल रूप से फ्रेंच भाषा का शब्द है। इसकी जड़ लैटिन शब्द **"रेनासी" (Renasci)** में है — "रे" (re) = **फिर से**, "नासी" (nasci) = **जन्म लेना**।
- ◆ इसलिए इसका शाब्दिक अर्थ है — **"पुनर्जन्म" (Rebirth)** या **"फिर से जागना" (Revival)**।
- ◆ इतिहास में इसका मतलब है — 14वीं से 16वीं सदी के बीच यूरोप में **प्राचीन यूनानी और रोमन ज्ञान, कला, साहित्य और तर्क का फिर से जागना** और एक नई बौद्धिक चेतना का जन्म।

▶ शब्द का सफ़र — किसने कब इसका प्रयोग किया?

वर्ष / सदी	विद्वान	क्या योगदान दिया?
1550 ई. (16वीं सदी)	जॉर्जियो वसारी (Giorgio Vasari) — इटली के चित्रकार व वास्तुकार	अपनी पुस्तक "सबसे श्रेष्ठ चित्रकारों, मूर्तिकारों और वास्तुकारों का जीवन-चरित" (Lives of the Most Excellent Painters, Sculptors and Architects) में इतालवी शब्द "रिनाशिता" (Rinascita) यानी पुनर्जन्म का सबसे पहले प्रयोग किया — स्थापत्य और मूर्तिकला में आए क्रांतिकारी बदलाव के लिए।
18वीं सदी	देनी दिदेरो (Denis Diderot) — फ्रांसीसी विद्वान	कला और साहित्य के नए सृजन के लिए "रेनेसाँ" शब्द का प्रयोग किया।
1855 ई. (19वीं सदी)	जूल मिशले (Jules Michelet) — फ्रांसीसी इतिहासकार	अपनी पुस्तक "फ्रांस का इतिहास" (History of France) में इसे एक पूरे ऐतिहासिक युग के नाम की तरह प्रयोग किया और इसे "दुनिया की खोज और मनुष्य की खोज" कहा।
1860 ई. (19वीं सदी)	याकोब बुर्कहार्ट (Jacob Burckhardt) — स्विस् इतिहासकार	पुस्तक "इटली में पुनर्जागरण की सभ्यता" (The Civilisation of the Renaissance in Italy) लिखकर इस शब्द को एक व्यापक सांस्कृतिक-बौद्धिक आंदोलन के रूप में लोकप्रिय बनाया। उन्होंने "व्यक्तिवाद" (Individualism) को इसकी मुख्य पहचान बताया।

■ आसान परिभाषा: पुनर्जागरण (Renaissance)

📖 **परिभाषा:** 14वीं से 17वीं सदी के बीच यूरोप (पहले इटली) में हुआ वह बौद्धिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक आंदोलन, जिसने प्राचीन यूनानी-रोमन ज्ञान को फिर से जीवित करके मध्ययुगीन रुढ़िवाद की जगह मानवतावाद, तर्क और वैज्ञानिक सोच को स्थापित किया।

💬 **आसान भाषा में:** लोगों ने "आँख मूँदकर मानना" छोड़कर "सोचकर, परखकर मानना" शुरू किया। ध्यान स्वर्ग और परलोक से हटकर इसी दुनिया और इंसान की खुशियों पर आ गया। 🏠 **उदाहरण:** जैसे किसी घर की पुरानी अलमारी में दादाजी की कीमती किताबें बरसों से धूल खा रही हों और एक दिन पोता उन्हें निकालकर पढ़े, उनसे सीखे और फिर अपनी नई किताब लिखे — पुरानी विरासत से प्रेरणा लेकर नया रचना, यही पुनर्जागरण है।

New India Education by Omkar Sir

B. प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएँ

विद्वान	परिभाषा / विचार (हिंदी में)
हेनरी एस. लुकस (Henry S. Lucas)	"पुनर्जागरण से तात्पर्य मध्यकालीन विचारों व संस्कृति के तरीकों में उस परिवर्तन से है, जो 13वीं सदी के बाद इटली में विकसित हुआ और 1600 ई. तक यूरोप के अन्य भागों में फैल गया।"
प्रोफेसर डेविड (Prof. David)	"पुनर्जागरण शब्द मानव के उन स्वतंत्रता-प्रिय और साहसपूर्ण विचारों को व्यक्त करता है, जो मध्ययुग में धर्माधिकारियों के यहाँ कैद थे।"
जे.ई. स्वेन (J.E. Swain)	"पुनर्जागरण ऐसा शब्द है जो उत्तर-मध्यकाल और आधुनिक काल के समस्त मानसिक परिवर्तनों को सामूहिक रूप से व्यक्त करता है। इसमें भूतकाल के प्रति रुचि और वर्तमान को अपनाने की बौद्धिक चेतना — दोनों थीं।"
जॉर्ज सेबाइन (George Sabine)	"पुनर्जागरण एक सामूहिक अभिव्यक्ति है, जिसका प्रयोग मध्यकाल के अंत और आधुनिक युग के आरंभ में दिखने वाले सभी बौद्धिक परिवर्तनों के लिए किया जाता है।"
एच.ए.एल. फ़िशर (H.A.L. Fisher)	धर्म के क्षेत्र में नया दृष्टिकोण, स्थापत्य व चित्रकला का नया रूप, व्यक्तिवाद का विकास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और छापेखाने का आविष्कार — इन सब विशेषताओं के सामूहिक रूप को "सांस्कृतिक नवजागरण" कहते हैं।

विद्वान	परिभाषा / विचार (हिंदी में)
जूल मिशले (Jules Michelet)	पुनर्जागरण के दो व्यापक आयाम — "दुनिया की खोज" और "मनुष्य की खोज" (नीचे विस्तार से)।

▶ जूल मिशले के दो आयाम — विस्तार से

🌍 आयाम 1: दुनिया की खोज (Discovery of the World)	👤 आयाम 2: मनुष्य की खोज (Discovery of Man)
◆ भौगोलिक खोजें: 15वीं-16वीं सदी में कुतुबनुमा (दिशा-सूचक यंत्र) और नई नौ-विद्या की मदद से कोलंबस, वास्को द गामा, मैगलन जैसे नाविकों ने नए समुद्री मार्ग और महाद्वीप खोजे। ◆ अटलांटिक, प्रशांत और हिंद महासागर व्यापार के लिए खुले; यूरोप का परिचय अमेरिका की "नई दुनिया", दक्षिणी अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया से हुआ। ◆ वैज्ञानिक दृष्टि: कॉपरनिकस, गैलीलियो, केपलर ने ब्रह्मांड की असली तस्वीर सामने रखी — "पृथ्वी केंद्र में है" वाली धार्मिक भ्रांति टूटी। ◆ प्रकृति को अनुभव, तर्क और प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर समझना शुरू हुआ।	◆ मानवतावाद का उदय: परलोक और चर्च की जगह मनुष्य का इसी दुनिया का जीवन, उसके सुख-दुख और गरिमा केंद्र में आए। ◆ मनुष्य ने मध्यकालीन पोपशाही (पोप की सत्ता) को अस्वीकार किया और स्वतंत्र सोच अपनाई। ◆ व्यक्तिवाद: हर व्यक्ति की प्रतिभा, तर्कशक्ति और आत्म-अभिव्यक्ति को सम्मान मिला। ◆ कला-साहित्य में मानव की सुंदरता, भावनाएँ और असीम संभावनाएँ मुख्य विषय बनीं — पेट्रार्क, दांते, लियोनार्दो, माइकलएंजेलो।

C. पुनर्जागरण को "पुनर्जन्म" क्यों कहा जाता है?

1. **प्राचीन ज्ञान का पुनर्जन्म:** मध्ययुग के अंधकार के बाद प्राचीन यूनान और रोम का साहित्य, दर्शन, कला और विज्ञान फिर से खोजा और पढ़ा गया। विद्वानों ने पुरानी पांडुलिपियाँ खोज-खोजकर उनका अध्ययन किया।
2. **मानव-केंद्रित सोच का पुनर्जन्म:** परलोक और धर्म-केंद्रित सोच की जगह मनुष्य, उसकी क्षमताओं और सांसारिक सुख को महत्व मिला।
3. **तर्क और बौद्धिक स्वतंत्रता का पुनर्जन्म:** रूढ़ियों और चर्च के बंधन से मुक्त होकर जिज्ञासा, आलोचना और स्वतंत्र चिंतन का नया जन्म हुआ।
4. **वैज्ञानिक दृष्टि और कला का पुनर्जन्म:** अंधविश्वास की जगह प्रयोग और अवलोकन; चित्रकला, मूर्तिकला और स्थापत्य में यथार्थवाद (असलियत जैसा चित्रण) की नई चेतना।

निष्कर्ष: यह केवल पुराने ज्ञान की वापसी नहीं थी, बल्कि मध्यकालीन संकीर्णता छोड़कर **आधुनिक वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक चेतना का नया जन्म** था।

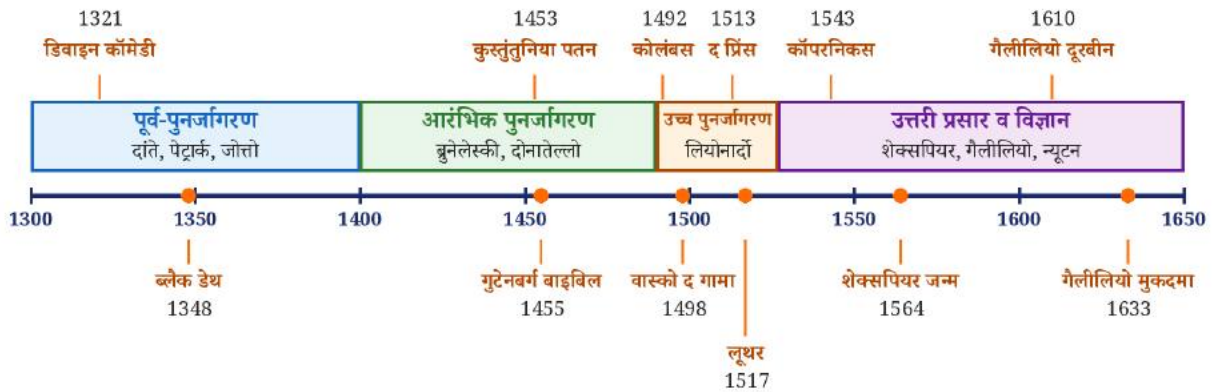
D. पुनर्जागरण का काल और उसके चरण

- ◆ **काल:** सामान्यतः **1350 ई. से 1550 ई.** के बीच। कुछ विद्वान इसे **1300 से 1600 ई.** तक मानते हैं, और व्यापक अर्थ में यह **14वीं से 17वीं सदी** तक फैला हुआ था।
- ◆ **शुरुआत इटली से हुई और 15वीं-16वीं सदी में यह फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड, नीदरलैंड, स्पेन तक फैल गया।**

चरण	लगभग काल	मुख्य पहचान	प्रमुख नाम
पूर्व-पुनर्जागरण	1300–1400 ई.	जनभाषा में साहित्य, मानवतावाद की शुरुआत	दांते, पेट्रार्क, बोकाच्चियो, चित्रकार जोत्तो (Giotto)
आरंभिक पुनर्जागरण	1400–1490 ई.	फ्लोरेंस केंद्र, परिप्रेक्ष्य की खोज, मेदिची संरक्षण	ब्रुनेलेस्की, दोनातेल्लो, मसाच्यो (Masaccio), बोत्तिचेली
उच्च पुनर्जागरण	1490–1527 ई.	कला का शिखर, रोम नया केंद्र	लियोनार्दो दा विंची, माइकलएंजेलो, राफ़ेल

चरण	लगभग काल	मुख्य पहचान	प्रमुख नाम
उत्तरी प्रसार व वैज्ञानिक चरण	1527–1650 ई.	उत्तरी यूरोप में साहित्य, धर्म-सुधार, वैज्ञानिक क्रांति	इरास्मस, शेक्सपियर, कॉपरनिकस, गैलीलियो

पुनर्जागरण के चरण — एक नज़र में (1300–1650 ई.)



नोट: चरणों की सीमाएँ अनुमानित हैं — अलग-अलग इतिहासकार थोड़ा अलग वर्ष मानते हैं।

चित्र 1: पुनर्जागरण के चरण और प्रमुख घटनाएँ (1300–1650 ई.)

▶ चारों चरणों को विस्तार से समझें

- पूर्व-पुनर्जागरण (1300–1400 ई.):** यह तैयारी का समय था। दांते, पेट्रार्क और बोकाचियो ने पहली बार लैटिन छोड़कर आम लोगों की भाषा में लिखा और धर्म के बजाय मनुष्य के जीवन को विषय बनाया। चित्रकार जोत्तो ने चेहरों पर असली भाव दिखाने शुरू किए।
- आरंभिक पुनर्जागरण (1400–1490 ई.):** इस चरण का केंद्र फ्लोरेंस नगर था। यहाँ के धनी बैंकर परिवार मेदिची ने कलाकारों को धन और काम दिया — इसे ही "संरक्षण" कहते हैं। इसी समय चित्र में दूरी और गहराई दिखाने की विधि, यानी परिप्रेक्ष्य, खोजी गई (विस्तार खंड 7 में)।
- उच्च पुनर्जागरण (1490–1527 ई.):** यह कला का सबसे ऊँचा दौर था। लियोनार्दो, माइकलएंजेलो और राफ़ेल — तीनों इसी समय सक्रिय थे। अब केंद्र रोम बन गया, क्योंकि पोप स्वयं कलाकारों को बड़े काम दे रहे थे। 1527 में विदेशी सेना द्वारा रोम की लूट के साथ यह चरण समाप्त माना जाता है।
- उत्तरी प्रसार और वैज्ञानिक चरण (1527–1650 ई.):** पुनर्जागरण इटली से निकलकर उत्तरी यूरोप (जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, नीदरलैंड) में फैला। वहाँ चित्रकला से अधिक साहित्य, धर्म-सुधार और विज्ञान में काम हुआ — इरास्मस, शेक्सपियर, कॉपरनिकस और गैलीलियो इसी चरण के नाम हैं।

📌 ध्यान दें — आधुनिक इतिहासकारों की बहस

बुर्कहार्ट ने पुनर्जागरण को मध्ययुग से एकदम अलग, अचानक आया बदलाव माना था। पर बाद के इतिहासकार — जैसे चार्ल्स हैस्किल्स (Charles Haskins) और पीटर बर्क (Peter Burke) — कहते हैं कि इसकी कई जड़ें 12वीं-13वीं सदी में ही मौजूद थीं; यानी यह अचानक टूटन नहीं, बल्कि धीरे-धीरे हुआ परिवर्तन था।

साथ ही यह बदलाव मुख्य रूप से नगरों के धनी और शिक्षित वर्ग तक सीमित था — इटली की लगभग तीन-चौथाई ग्रामीण किसान आबादी इससे बहुत कम प्रभावित हुई। मुख्य परीक्षा के उत्तर में यह संतुलित दृष्टि अतिरिक्त अंक दिलाती है।